समकालीन विश्व : मुद्दे एवं चुनौतियाँ,
संपादक – डॉ. हेमा राग धुंधवाल
प्रकाशक – श्रियांशी प्रकाशन, आगरा,
ISBN 978-9381247-58-7 संस्करण –2022

7

शीत युद्ध की समाप्ति और कश्मीर में आतंकवाद – अंतर्सम्बन्ध

मिथिलेश (शोधार्थी)
हेमचंद यादव विश्वविद्यालय,
दुर्ग (छतीसगढ़)

परिचय –

1989 में पूर्व सेवियत संघ की समाप्ति के साथ लगभग 45 वर्षो तक चले शीत युद्ध का अवसान हो गया। द्वितीय महायुद्ध के बाद प्रारंभ हुए इस शक्ति द्वन्द्व में प्रत्येक दशक में वृद्धि होती गयी और समस्त विश्व आणविक युद्ध के भय से पांच दशकों तक आंतरिक था। आधुनिक से आधुनिक हथियारों को विकसित करने में ही अमेरिका और सोवियत संघ की ऊर्जा खर्च होती रही। अपने अपने प्रभाव क्षेत्रों के विस्तार में दोनों महाशक्तियों ने संपूर्ण विश्व की किलेबंदी करवा दी।

परिणामतः 1989 में संपूर्ण विश्व में अमेरिका के दर्जनों सशस्त्र सैनिक अड्डे थे। जबकि सोवियत संघ के भी दर्जनों सैनिक अड्डे थे। दोनों के पास 1500 से अधिक आणविक शस्त्र थे। जिनसे अनेकों बार पृथ्वी की कुल जनसंख्या का सहार हो सकता है।

मुख्य शब्द – शीतयुद्ध, कश्मीर, आतंकवाद, सोवियत संघ, युद्ध, शस्त्र संघर्ष।

पंजाब में आतंकवाद की समाप्ति के बाद पाकिस्तान ने कश्मीर पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। पूर्व आई.एस.आई डाइरेक्टर जावेद नासिर के अनुसार पाकिस्तान में कश्मीरी आतंकवादियों को प्रशिक्षित करने के लिए कई कैम्प चल रहे हैं। 1963 में ज़ावेद नासिर सहित लगभग 40 सैनिक अधिकारियों का तबादला केवल इसलिए कर दिया गया क्योकि वो कश्मीर में आतंकवादियों के मामले में आई.एस.आई की गतिविधियों को कम

करना चाहते थे।[2] कश्मीर आज विश्व का सर्वाधिक सैन्यीकृत इलाका है जहां चार लाख से अधिक भारतीय सेना विद्यमान है।[3] इस प्रकार आतंकवाद से निबटने में भारत को भारी राशि खर्च करनी पड़ रही है। केवल कश्मीर में करोड़ों रू. प्रतिदिन का खर्च सेना पर आ रहा है। इसके साथ आज अलगाववादियों के अलावा भारत के हर छोटे–बड़े अपराधिक संगठनों के पास एके–47 जैसे हल्के एवं घातक शस्त्र मौजूद है जो पाकिस्तान अफगान पाइप लाइन से आते हैं।[4]

विचारणीय प्रश्न यह है कि आई.एस.आई. द्वारा भारतीय आतंक संगठनों को हल्के शस्त्रों की सप्लाई से पाकिस्तान सैन्य सहायता का प्रश्न कैसे जुड़ा है ? वस्तुतः यदि हम भारतीय आतंकवादियों के द्वारा प्रयुक्त किये जा रहे शस्त्रों विशेषतः कश्मीरी आतंकवादियों द्वारा प्रयुक्त किए जाने वाले शस्त्रों और सोवियत घुसपैठ के समय अफगान मुजाहिदोनों द्वारा प्रयुक्त किये जा रहे शस्त्रों पर निगाह डालें तो हमें इस प्रश्न का उत्तर मिल जाता है। 1980 के दशक में अफगानिस्तान को अमेरिका पाकिस्तान के माध्यम से शस्त्र उपलब्ध कराता था। राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय अनेक कारणों से अमेरिकी प्रशासन ने यह तय किया था कि अफगानिस्तान में सोवियत संघ से उसी साम्यवादी गुरिल्ला युद्ध पद्धति से निबटा जायेगा। जिसका कटु अनुभव अमेरिका को वियतनाम में हो चुका था। इसके अलावा प्रत्यक्ष युद्ध के न मात्र गंभीर अंतर्राष्ट्रीय परिणाम होते बल्कि यह बहुत महंगा भी पड़ता। वियतनाम युद्ध का खर्च 61000 मिलियन डालर था।[5] अतः अमेरिका ने अपेक्षातया सस्ता और अधिक लंबा चलने वाला गुरिल्ला युद्ध का रास्ता चुना। छापामारा युद्ध में स्पष्ट रूप से भारी युद्ध प्रणालियों की उपयोगिता नहीं थी। इसके अतिरिक्त अफगानिस्तान की पठारी परिस्थितियां हल्के शस्त्रों के लिए अधिक उपयुक्त थी। अतः अमेरिकी प्रशासन ने यह निर्णय लिया कि हल्की असाल्ट राइफलें, एवं अन्य हल्के उपकरण अफगान मुजाहिदीनों को हस्तांतरित किए जाये। इसके लिए पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आई.एस.आई को माध्यम बनाया गया। निश्चित रूप से पाकिस्तान उन शास्त्रों को शत प्रतिशत हस्तांतरित नहीं करता था बल्कि इसकी एक बड़ी मात्रा पाकिस्तान में ही रोक ली जाती थी। जो इस समय कश्मीर और अन्य स्थानों पर आतंकवादियों के काम आ रही है। पेंटागन ने रूसी माडल की एके–47 और एके–56 एसाल्ट राइफलों को इनकी अत्यधिक प्रभावशीलता के कारण चुना।[6] अफगान मुजाहिदीनों को इन असाल्ट राइफलों की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए सी.आई.ए. (अमेरिकी गुप्तचर संस्था) ने चीन, मिस्र और तुर्की से बड़ी मात्रा में इनकी खरीद की।[7] सितम्बर 1981 में अमेरिकी टेलीविजन एनबीसी को दिए गए अपने साक्षात्कार में मिस्र के राष्ट्रपति अनवर सादात ने इस प्रकार की राइफलें बड़ी मात्रा में देने पर सहमति जतायी।[8] उल्लेखनीय है कि मिस्र 1973 से पहले एक मजबूत एक सोवियत सहयोगी था। तथा सोवियत संघ मिस्र का मुख्य शस्त्र आपूर्ति कर्ता था। तुर्की और इसराइल से लगभग 6 लाख असाल्ट राइफलें, 8000 लाइट मशीन गन, मोर्टार, और दूसरे हल्के सैन्य उपकरण

खरीदे गए।[9] इन शस्त्रों के साथ लगभग 2000 मिलियन से अधिक के हल्के सैन्य उपकरण अमेरिका ने पाकिस्तान के माध्यम से अफगान मुजाहिदीनों को हस्तांतरित किये जिनमें प्रमुख थे।

1. रूसी माडल के सतह से हवा में मार करने वाले 8 एस ए एफ 7 मिसाइलें।
2. एफआईएम–92 स्टिंगर मिसाइलें।
3. हल्की मशीन गनें।
4. बारूदी सुरंगे।
5. अत्यंत घातक टाइम बम्स
6. राकेट लांचर
7. अमेरिकी अत्याधुनिक स्टिंगर मिसाइलें।[10]

उल्लेखनीय है कि अमेरिकी माडल की उपर्युक्त मिसाइलें केवल नाटो सदस्यों के पास थी। अतः सी.आई.ए. ने इन मिसाइलों को अफगान मुजाहिदीनों को दिए जाने पर कड़ा विरोध जताया था। क्योंकि इन मिसाइलों के चीन पहुंच जाने की आशंका थी। अधिकारिक के रूप में अमेरिकी कांग्रेस ने स्टिंगर मिसाइलों को अफगान मुजाहिदीनों को दिए जाने पर 1985 में जाकर सहमति दी। 1985 में लगभग 1000 स्टिंगर मिसाइलें पाकिस्तान के माध्यम से अफगानिस्तान पहुंचायी गयी। इस मिसाइलों से लगभग 2000 यार्ड की दूरी से ही पैटल टैंको एवं युद्धक हेलिकाप्टरों सहित सभी निशानों पर सटीक मार किया जा सकता हैं।

अफगान मुजाहिदीनों को अमेरिकी शस्त्र पहुंचाने का जिम्मा पाकिस्तान खुफिया एजेंसी आई.एस.आई. का था, जो कि एक पूर्णतः सैनिक संस्था है। अमेरिका प्रशासन द्वारा इन शस्त्रों के पाकिस्तान पहुंचा दिये जाने पर ये पूर्णतः आई.एस.आई के नियंत्रण में आ जाते थे तथा अफगानिस्तान सीमा के निकट ओझिरी जैसे अनेक आयुधगारों में रख दिया जाता था। यह आई.एस.आई. ही थी जो यह तय करती थी कि किस अफगान गुट को कौन से शस्त्र और कितनी मात्रा में प्राप्त होगें।[12] और निश्चित रूप से वह उन अफगान विद्रोहियों को अधिक शस्त्र देती थी जो पाकिस्तानी सेना से अधिक अनुकूलता रखते थे।[13] अफगान मुजाहिदीनों को सौंपे जाने वाले अथियारों का कोई अधिकारिक रिकार्ड या एकाउण्ट पाकिस्तानी सैनिक सरकार नहीं रखती थी।[14] पाकिस्तानी बंदरगाहों पर जब ये शस्त्र उतारे जाते थे तब पाकिस्तानी सेना इनकी हैण्डलिंग या रख–रखाव कार्य करती थी पाकिस्तानी कस्टम विभाग नहीं।[15] इस प्रकार इस बात का कोई निश्चित एकाउण्ट पाकिस्तानी सेना नहीं रखती थी कि अमेरिका से कितने शस्त्र पाकिस्तान पहुंचे और कितने अफगान विद्रोहियों को हस्तांतरित किये गये।

इसका सीधा अर्थ है कि पाकिस्तानी सेना ने अफगान विद्रोहियों को पहुँचाए जाने वाले शस्त्रों में से बड़ी मात्रा में शस्त्र चोरी कर लेती थी।

1980–89 तक कुल कितने शस्त्र अमेरिका ने अफगान विद्रोहियों हेतु जारी किए यह अज्ञात है। लेकिन इसका भी अनुमान लगाना मुश्किल है कि इनमें से कितने हथियार पाकिस्तान सेना ने चोरी किये। फिर भी विभिन्न स्रोतो के औसत के आधार पर यह कहा जा सकता है कि कुल अमेरिकी सप्लाई का 30 प्रतिशत पाकिस्तानी सेना द्वारा अपने पास रोक लिया जाता था। एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार 1989 के मध्य तक 600000 से अधिक क्लाशनिकोव राइफलें अमेरिकी द्वारा अफगानिस्तान भेजी जा चुकी थी। जिनका बड़ा हिस्सा पाकिस्तान सेना ने हडप लिया। एक अमेरिकी पत्रकार एड गारसेन को एक पूर्वत आई.एस.आई. प्रमुख ने 1993 मेंयह बताया की आई.एस.आई. के पास 30 लाख से अधिक क्लासनिकोव राइफले मौजूद है जो अफगान आपूर्ति लाइन से उड़ाई गयी है।

एक पाकिस्तानी विद्वान आयेशा आगा सिद्दिकी ने आई.एस.आई. द्वारा अफगान आपूर्ति लाइन से शस्त्र चोरी के बारे में लिखा है कि अफगानिस्तान आपूर्ति लाइन से सर्वाधिक महत्वपूर्ण शस्त्र प्राप्ति थी अमेरिकी स्टिंगर मिसाइलें 1985 से 1987 के बीच पाकिस्तानी सेना ने 250 के लगभग स्ट्रिगर मिसाइलें प्राप्त की। (अफगान आपूर्ति लाइन से) अमेरिकी कांग्रेस में भी इस संबंध में आवाजें उठी। अनेक सदस्यों ने पाकिस्तान पर यह आरोप लगाया कि भारी शस्त्र सहायता देने के बावजूद पाकिस्तान, अफगानिस्तान पहुंचाने के लिए शस्त्र का केवल एक तिहाई ही आपूर्ति करता है। कांग्रेस ने इस बात की जॉच के लिए की क्या वास्तव में पाकिस्तानी सेना द्वारा दो तिहाई शस्त्र रख लिए जाते है ? एक टीम भेजने का निर्णय किये। जब यह टीम पाकिस्तान का दौरा करने वाली थी उसके ठीक पहले 1988 में से सबसे बड़े आयुध भण्डार ओझिरी (रावलपिण्डी) में आग लग गयी जिसमें सौ से अधिक लोग मारे गये।

इस प्रकार इस बात के अनेकों प्रमाण है जिससे यह साबित होता है कि अफगान विद्रोहियों को भेजे गये अमेरिकी शस्त्रों का आधे से अधिक हिस्सा पाकिस्तानी सेना द्वारा रोक लिया जाता था। इन्हीं हल्के शस्त्रों को पाकिस्तान ने पहले पंजाब में आतंकवादियों को दिया और अब कश्मीरी आतंकवादियों को दे रहा है। तथा अमेरिकी शस्त्रों से अपेक्षातया सस्ता (या लगभग मुफ्त क्योंकि ये शस्त्र भी चोरी के है।) युद्ध भारत से लड़ रहा है जो अपेक्षातया अधिक घातक एवं अधिक प्रभावी है। क्योकि पिछले दस वर्षो से चार लाख से अधिक भारतीय सेना को पाकिस्तान ने कश्मीर में उलझा रखा है। जबकि प्रत्यक्ष युद्ध में पाकिस्तान दो सप्ताह से अधिक लम्बा युद्ध भारतीय सेना से नहीं लड़ सकता। प्रायः पाकिस्तान को अमेरिकी सैन्य सहायता में हल्के शस्त्रों के प्रभाव को लगभग पूर्णतः नजर अंदाज कर दिया जाता है। जबकि हकीकत यह है कि भारतीय सुरक्षा के संबंध में अब तक पाकिस्तान को उपलब्ध कराये गये हल्के शस्त्र अधिक घातक सिद्ध हुए है।

संदर्भ –

1- कोलिन एस.ग्रे : हाउ फैज बार चेन्ज स्थित द एण्ड ऑफ कोल्डवार 2005।

2- सिपरी : 1995 पृष्ठ . 213.

3- आई.एस.एस. : इण्टर नेशनल इस्टीट्यूड ऑफ स्टेर्टानिक इण्स्ट्रीज : आम्सकार्ड 1998 पृष्ठ. 14.

4- ह्यूमन राइट वॉच पृष्ठ–15.

5-. एशियन सर्वे : 1983 पृ.–122–123.

6- सिपरी ईयर बुक : 1985 पृष्ठ –481.

7- आकताब आकताब : पूर्वील, पृष्ठ .81

8- ह्यूमन राइट वॉच पृष्ठ –17.

9- ह्यूमन राइट वॉच पृष्ठ –23.

10- ह्यूमन राइट वॉच पृष्ठ–55

11- वांशिगटन पोष्ट 1994 एण्डरसन

12- ह्यूमन राइटवॉच पृष्ठ –18.

13- जय स्रोत – साउथ एशियन सेरोरिज़्म पेटिल।

14- लघु शस्त्र सर्वेक्षण 2011, विषम विवरण अंक –7, 2011.

15- लघु शस्त्र सर्वेक्षण रिसर्च नोट नं.–1 जनवरी 2011.